एक खुशमिजाज़ आदमी की कमीज़

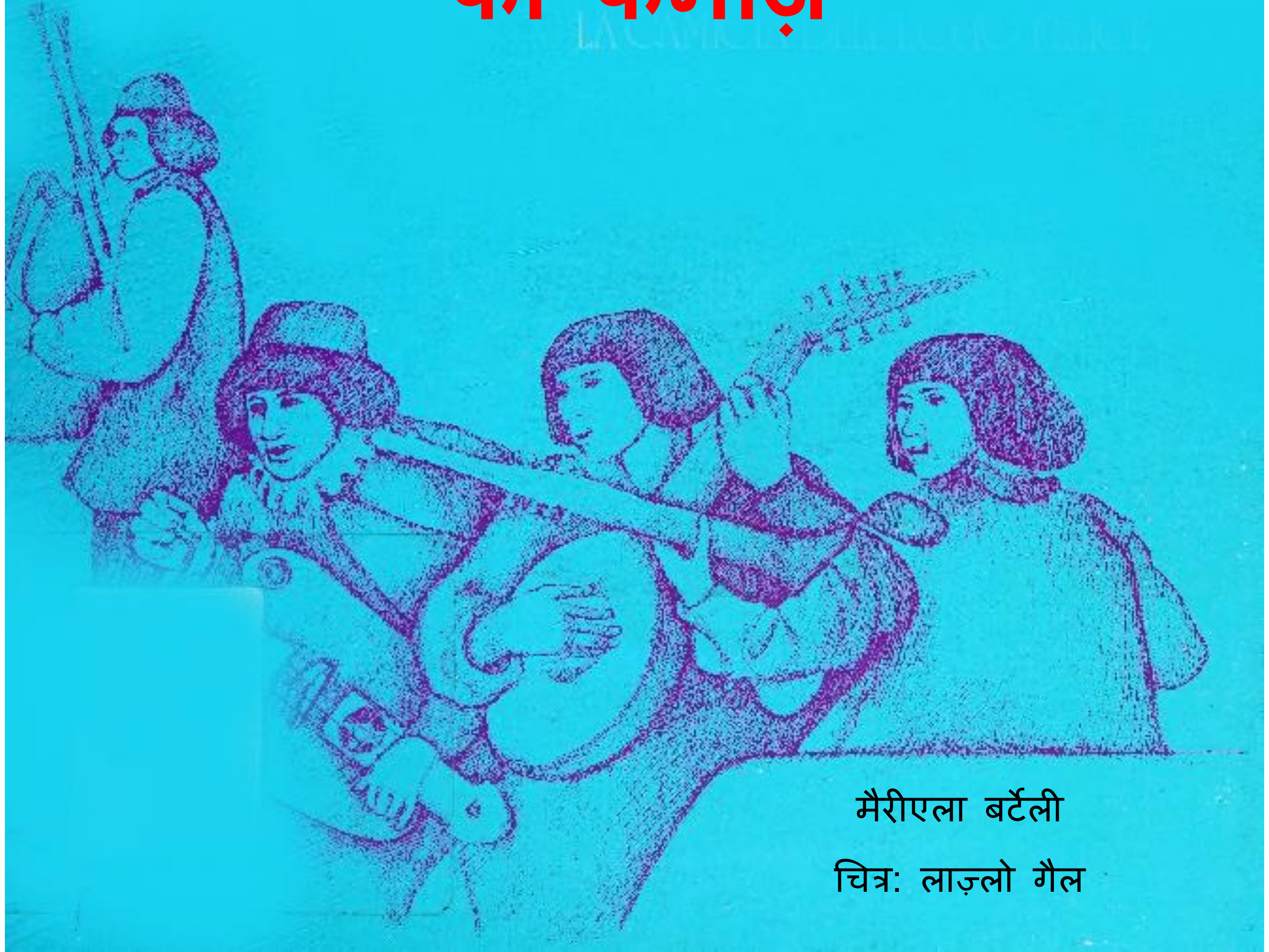

मैरीएला बर्टेली
चित्र: लाज़्लो गैल

एक खुशमिजाज़ आदमी की कमीज़

मैरीएला बर्टेली

चित्र: लाज़्लो गैल

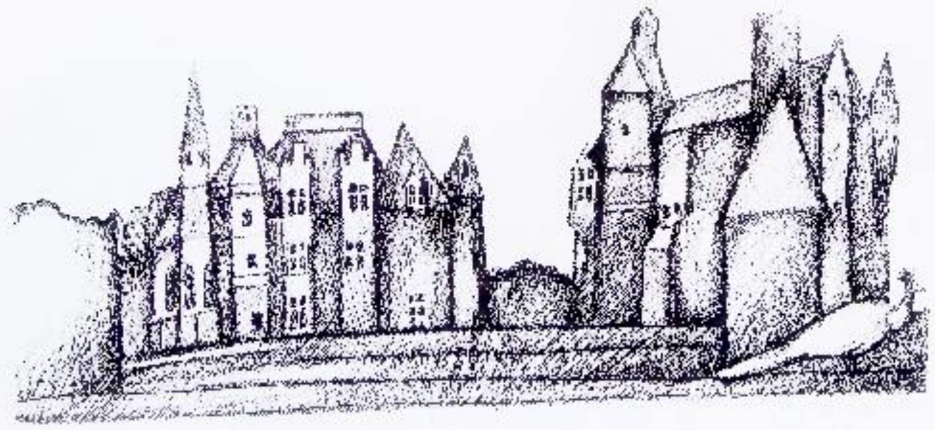

एक समय एक बहुत ही शक्तिशाली राजा था. उसके पास सोना, महल, सब कुछ था. उसका एक बेटा भी था जिसे वह बहुत प्यार करता था - वह कहता था, कि बेटा उसकी आँखों का तारा था. लेकिन इन आशीर्वादों के बावजूद, राजा की खुशी पूरी नहीं थी, क्योंकि उसके बेटे की तबियत ठीक नहीं रहती थी.

दरअसल, उसका बेटा हमेशा उदास रहता था, और हर दिन अपनी बालकनी से बाहर उदास निगाहों से देखता रहता था. कोई भी उसे खुश नहीं कर सकता था. रिश्तेदारों ने दरबारी संगीतकारों, खेलों और उस पार्क में लंबी सैर के ज़रिए उसका ध्यान बटाने की कोशिश की, जहाँ उन्होंने कभी साथ में कई खुशनुमा पल बिताए थे. लेकिन उसकी कोई भी कोशिश काम नहीं आई, और राजकुमार हर दिन और भी पीला पड़ता गया.

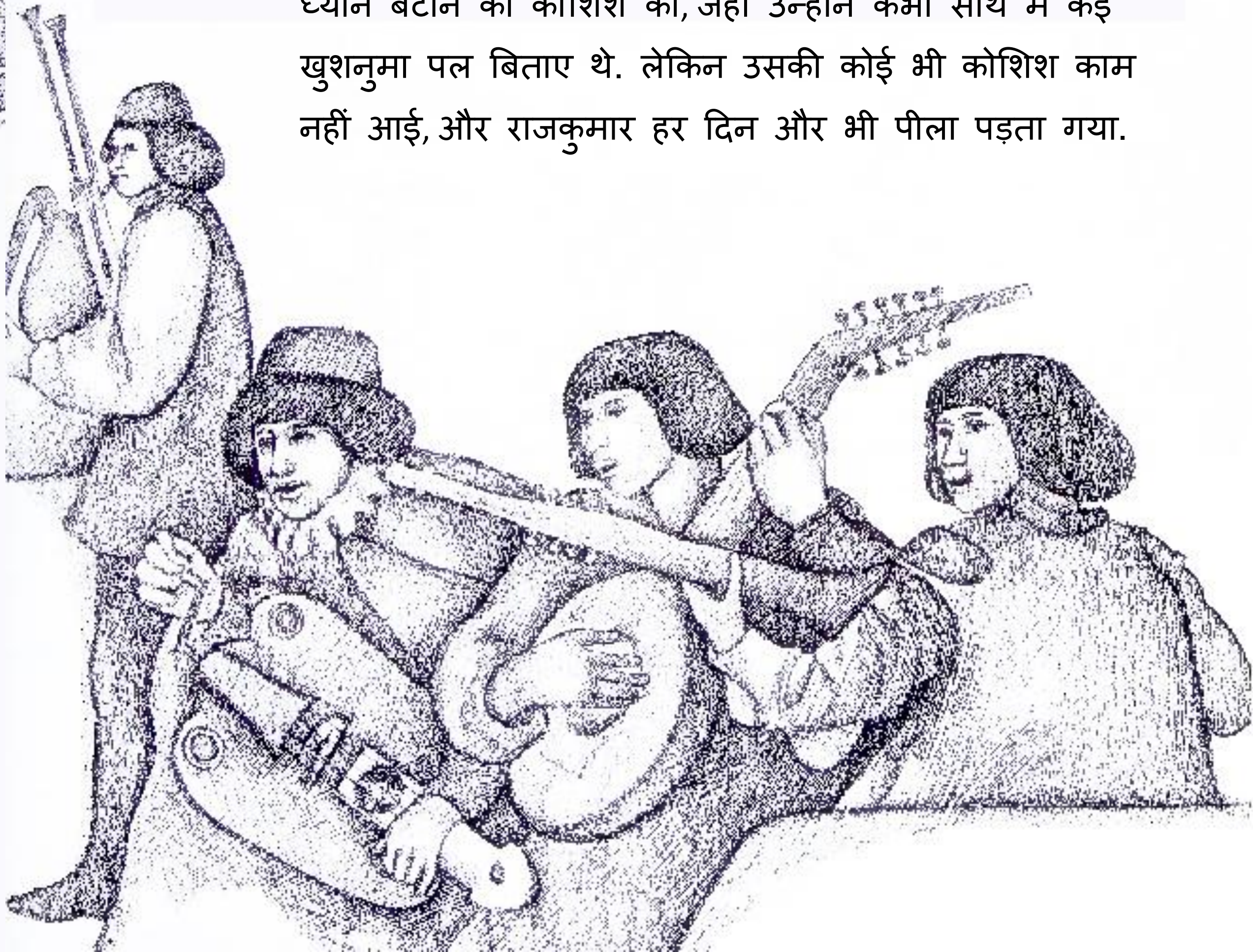

अंत में, राजा ने राज्य के सबसे बुद्धिमान डॉक्टरों, दार्शनिकों और प्रोफेसरों को बुलाया. इनमें से तीन बुद्धिमान व्यक्ति उससे परामर्श करने और अपनी सलाह देने आए.

उनमें से पहले ने कहा: "मेरी सोची-समझी राय है कि अगर वह ठीक नहीं है, तो वो ज़रूर बीमार होगा."

"नहीं, नहीं," दूसरे डॉक्टर ने असहमति जताई. "अगर वह बीमार नहीं है, तो वो ज़रूर ठीक होगा." और फिर वे इस मुद्दे पर बहस करने लगे.

फिर तीसरे डॉक्टर ने, जो सबसे बुद्धिमान साबित हुआ, कहा: "महाराज, आपका बेटा गंभीर रूप से बीमार है. लेकिन सौभाग्य से, इसका एक इलाज है. आपको किसी खुश आदमी की कमीज़ ढूंढकर अपने बेटे को पहनानी होगी. एक खुश आदमी की कमीज़ राजकुमार को ठीक कर देगी. लेकिन वह व्यक्ति सचमुच खुश होना चाहिए, वरना इलाज काम नहीं करेगा."

राजा ने इस आदमी की राय पर भरोसा किया और डॉक्टर को उसकी सलाह के लिए सोने का एक थैली भेंट की.

राजा ने डॉक्टर की सलाह पर तुरंत अमल किया, क्योंकि उसे यकीन था कि उसके विशाल राज्य में कम से कम एक खुश व्यक्ति तो ज़रूर होगा. दूतों ने जाकर राजा की घोषणा पढ़ी, जिसमें सभी खुश लोगों को जल्द से जल्द महल में रिपोर्ट करने का आदेश दिया गया था.

अगले कुछ दिनों में, जो लोग खुद को खुश समझते थे, वे महल में आने लगे.

सबसे पहले एक सिपाही आया. तेज़ी से कमरे में प्रवेश करते हुए उसने कहा: "महाराज, मैं आपकी सेना में खुश हूँ. मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है."

राजा ने सिपाही की खुशी की परीक्षा लेने का फैसला किया.

"क्या तुम सेनापति बनना चाहोगे?" उसने पूछा.

"नहीं, नहीं. यह बहुत ज़्यादा ज़िम्मेदारी होगी," सिपाही ने जवाब दिया.

राजा ने आगे कहा: "मैं तुम्हें अपनी सभी सेनाओं का सेनापति बनाऊँगा, और पूरे राज्य में तुम्हारे अलावा किसी और के पास इतनी शक्ति नहीं होगी – मेरे यानी तुम्हारे राजा के अलावा."

सिपाही ने एक पल सोचा. "क्या तब मैं उस रसोइये की भी कमान संभालूँगा, जो हमारे लिए इतना घटिया खाना बनाता है?"

"हाँ. अगर तुम सेनापति होगे, तो तुम उसे नौकरी से निकाल सकते हो."

"ठीक है, हाँ, तो मैं ज़रूर सेनापति बनना चाहूंगा," सिपाही ने फैसला किया.

"तो तुम सच में खुश नहीं हो. तुम यहाँ से जाओ!" और इन शब्दों के साथ, राजा ने सिपाही को बर्खास्त कर दिया.

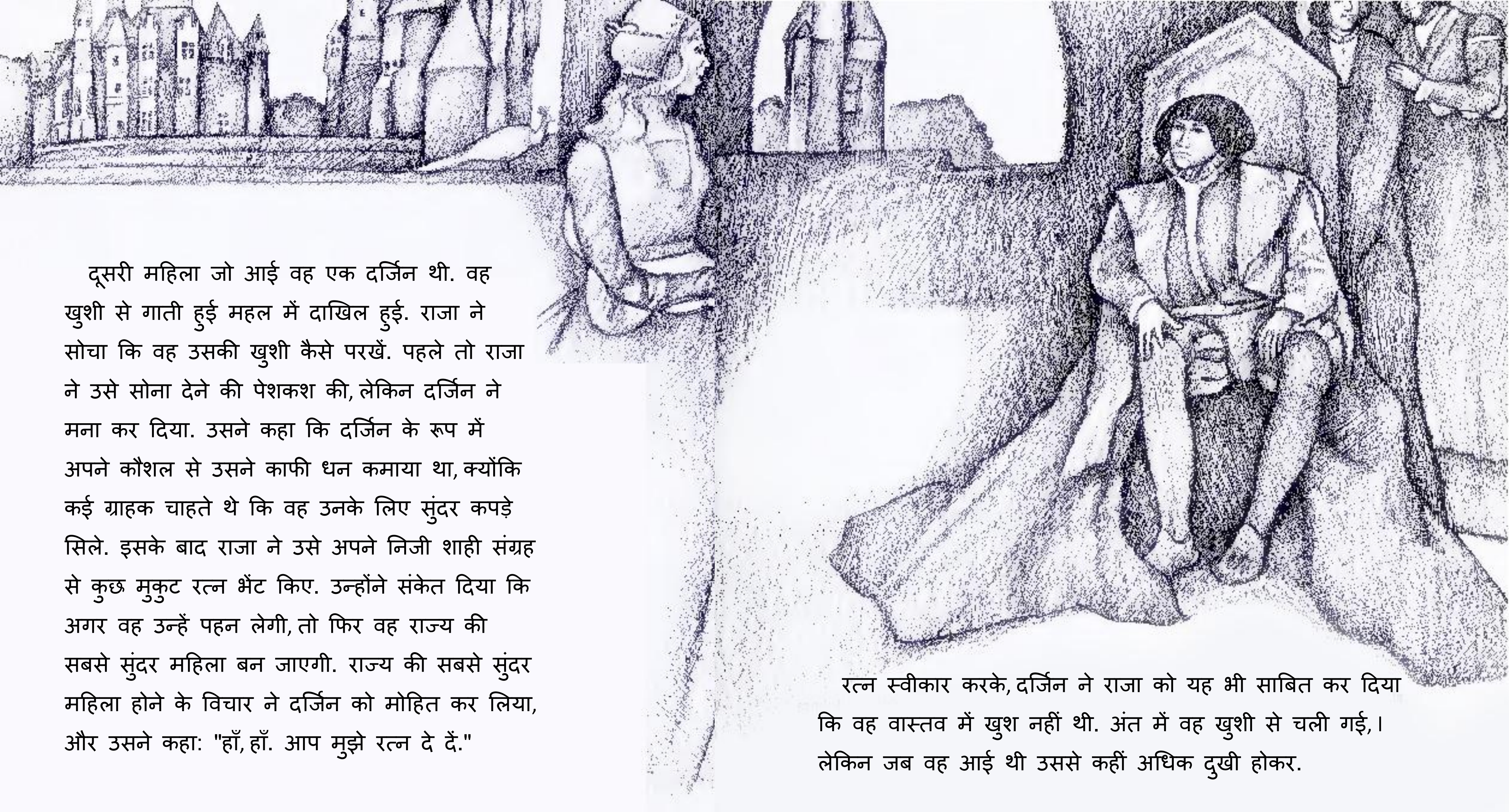

दूसरी महिला जो आई वह एक दर्जिन थी. वह खुशी से गाती हुई महल में दाखिल हुई. राजा ने सोचा कि वह उसकी खुशी कैसे परखें. पहले तो राजा ने उसे सोना देने की पेशकश की, लेकिन दर्जिन ने मना कर दिया. उसने कहा कि दर्जिन के रूप में अपने कौशल से उसने काफी धन कमाया था, क्योंकि कई ग्राहक चाहते थे कि वह उनके लिए सुंदर कपड़े सिले. इसके बाद राजा ने उसे अपने निजी शाही संग्रह से कुछ मुकुट रत्न भेंट किए. उन्होंने संकेत दिया कि अगर वह उन्हें पहन लेगी, तो फिर वह राज्य की सबसे सुंदर महिला बन जाएगी. राज्य की सबसे सुंदर महिला होने के विचार ने दर्जिन को मोहित कर लिया, और उसने कहा: "हाँ, हाँ. आप मुझे रत्न दे दें."

रत्न स्वीकार करके, दर्जिन ने राजा को यह भी साबित कर दिया कि वह वास्तव में खुश नहीं थी. अंत में वह खुशी से चली गई,। लेकिन जब वह आई थी उससे कहीं अधिक दुखी होकर.

राजा के सामने आने वाला तीसरा व्यक्ति एक भिक्षु था. वह अपनी खुशी साबित करने के लिए अपने मठ से महल तक काफ़ी लंबा सफ़र तय करके आया था. उसने बताया कि उसके खुशी के दिन पढ़ने, प्रार्थना करने और मठ के बगीचे में काम करने में बीतते थे. राजा ने सोचा, "वह संतुष्ट लग रहा था, काफ़ी है, लेकिन उसकी परीक्षा तो लेनी ही चाहिए." राजा ने पूछा: "क्या यह अद्भुत नहीं होगा यदि तुम्हारा खुद का अपना चर्च होता?"

"नहीं," मेरे मठ के पास वाला चर्च बहुत भव्य है, और मुझे वहाँ प्रार्थना करने से बहुत संतुष्टि मिलती है."

"तो फिर क्या तुम मेरे मुकुट को पहनकर कुछ समय के लिए राजा बनना चाहोगे?"

भिक्षु रुचि तो दिखा रहा था, लेकिन सोचने के बाद उसने मना कर दिया.

राजा ने फिर पूछा: "तुम विद्वान हो, है ना?"

"हाँ, बिल्कुल," भिक्षु ने उत्तर दिया, "किताबें मुझे इस दुनिया और परलोक के बारे में समझने में मदद करती हैं."

"क्या तुमने शाही पुस्तकालय देखा है?" राजा ने पूछा. "उसमें मुलायम चमड़े के आवरणों वाली, इंद्रधनुष के सभी रंगों की शानदार किताबों की कतारें लगी हैं. वहां कई भाषाओं में लिखी किताबें हैं, हर चीज़ के बारे में किताबें. तुम जब तक चाहो मेरे पुस्तकालय में रह सकते हो और उन किताबों को पढ़ सकते हो. क्या तुम ऐसा चाहोगे?"

किताबों की सुंदरता का ज़िक्र सुनकर, भिक्षु ने राजा का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया. लेकिन ऐसा करके उसने दिखा दिया कि उसके साधारण जीवन की खुशियाँ भी पूरी नहीं हुई थीं. राजा ने उसे उदास होकर विदा कर दिया, क्योंकि एक सुखी और संतुष्ट व्यक्ति ढूँढ़ना बहुत मुश्किल साबित हो रहा था. इसी बीच, राजकुमार धीरे-धीरे मर रहा था.

अगली पंक्ति में एक बुढ़िया आई जिसकी बेटी ने उसे राजा की घोषणा के बारे में बताया था, क्योंकि बुढ़िया ठीक से सुन नहीं पाती थी. उसने एक लंबा और उपयोगी जीवन जिया था. उसके दस बच्चे, बीस नाती-पोते और तीस परपोते-परपोतियाँ थीं. वे सभी उससे बहुत प्यार करते थे और अक्सर उससे मिलने आते थे. राजा यह मानना चाहता था कि बुढ़िया खुश थी, लेकिन वो उसे परखना चाहता था.

"बुढ़िया," राजा ने विनम्रता से कहा, "तुम्हें अपना महल कैसा लगेगा?"

"क्या? एक महल?" वह हँसी. "ओह, मेरे लिए वहां की सफ़ाई, रगड़-रगड़ और धूल झाड़ना बहुत ज़्यादा काम होगा. मैंने ज़िंदगी भर यही काम किया है. मैं अब घर का काम नहीं करना चाहती."

"अगर तुम्हारे नाती-पोतों के लिए थोड़ा सोना दूँ तो तुम्हें कैसे लगेगा?"

"अरे नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं होगी. भगवान का शुक्र है, वे सभी समृद्ध हैं और उन्हें इसकी कोई ज़रूरत नहीं है."

"तो ठीक है," राजा ने ऊँची आवाज़ में और साफ़ शब्दों में कहा, "देखो, तुम ठीक से सुन नहीं सकती. क्या तुम मेरे सबसे अच्छे डॉक्टरों में से एक को दिखाना चाहोगी?" वह तुम्हें फिर से सुनने में मदद कर सकेगा."

"क्या?" उसने कहा. "शब्द? फुसफुसाहट? गाने? ओह, यह बहुत अच्छा होगा. इससे मुझे फिर से एक जवान लड़की जैसा महसूस होगा."

और जब बुढ़िया राजा के डॉक्टर से अपनी सुनने की शक्ति वापस पाने के लिए राज़ी हो गई, तो राजा को एहसास हुआ कि बुढ़िया भी सचमुच खुश या संतुष्ट नहीं थी.

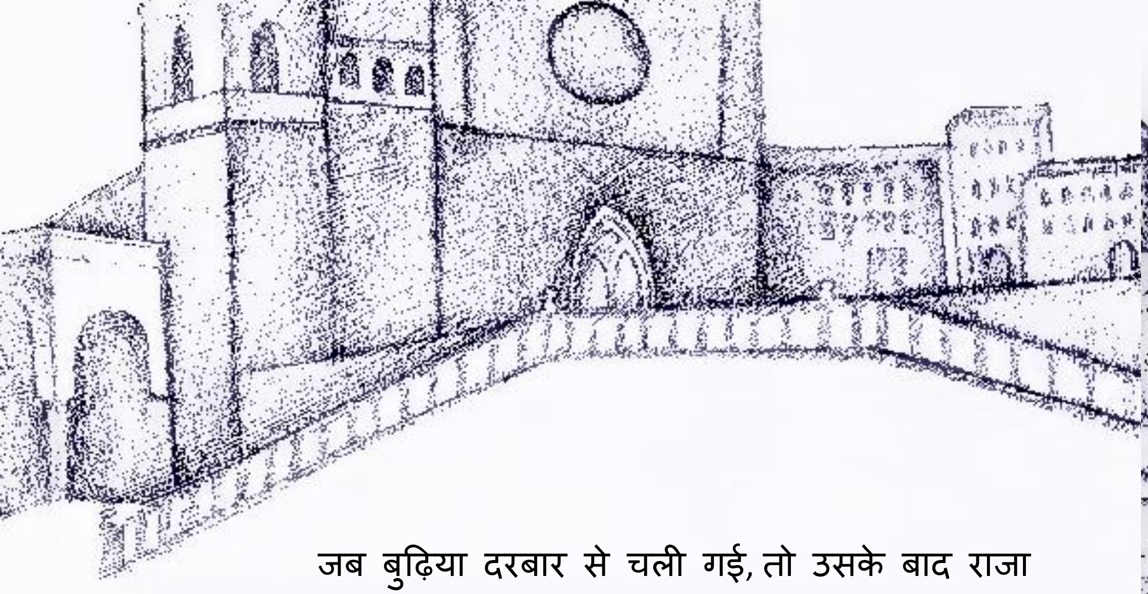

जब बुढ़िया दरबार से चली गई, तो उसके बाद राजा निराशा में डूब गया. उसने अपने राज्य में एक सच्चा सुखी व्यक्ति ढूँढ़ने के लिए एक लंबी यात्रा करने का फैसला किया. वह दरबारियों के एक समूह के साथ निकल पड़ा और कई हफ़्तों तक यात्रा करता रहा.

एक दिन जब राजा लगभग उम्मीद छोड़ चुका था, तब उसके दरबारी घोड़ों को पानी पिलाने के लिए रुके. गहरे विचारों में डूबा राजा नदी से दूर भटकता हुआ एक किसान के पास पहुँचा जो अपने अंगूर के बाग में काम कर रहा था. बसंत ऋतु थी और किसान अपनी बेलों की छंटाई कर रहा था.

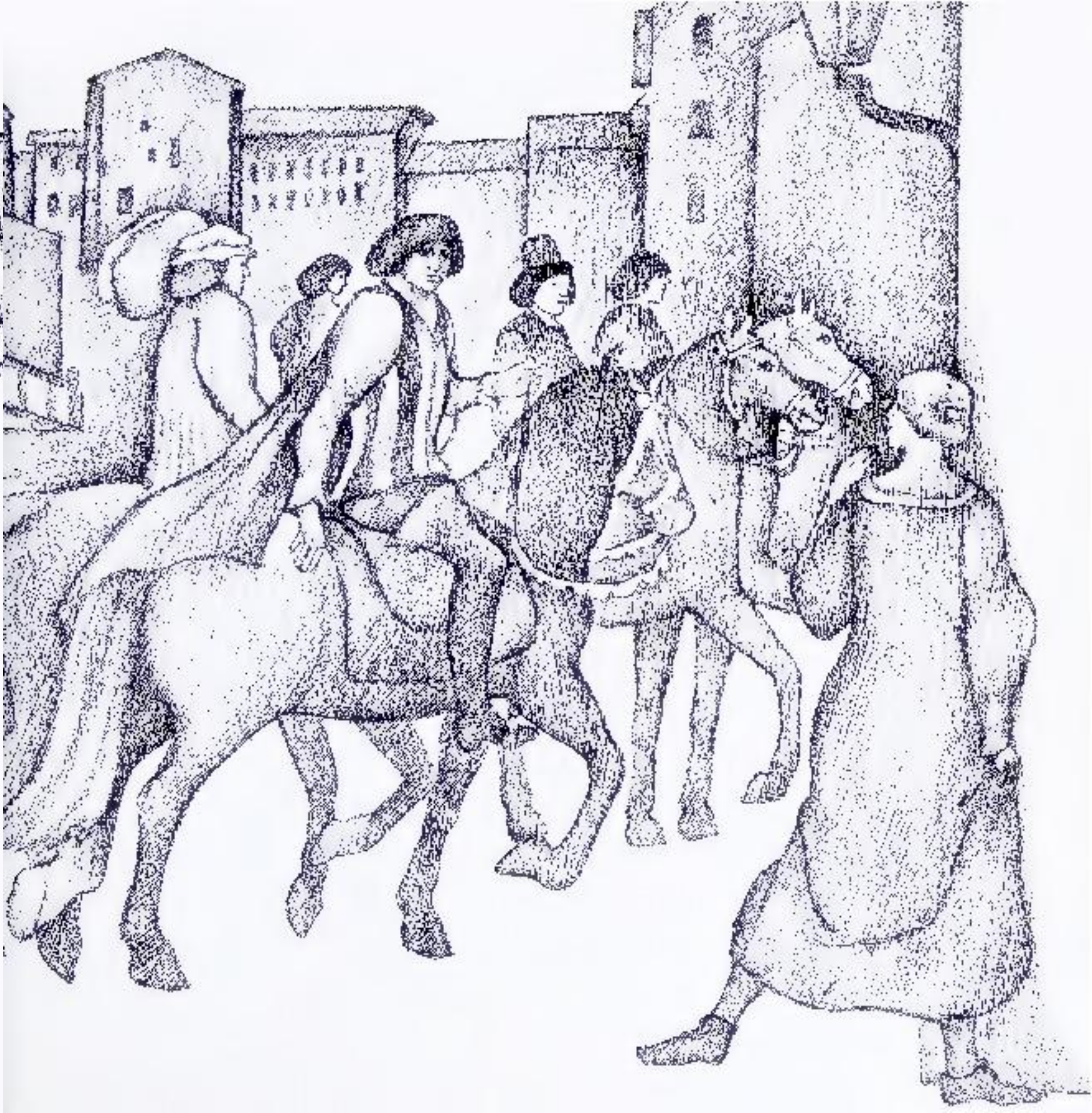

"क्यों भाई, तुम क्या कर रहे हो?" राजा ने पूछा.

"मैं अपनी बेलों की छंटाई कर रहा हूँ ताकि इस साल अंगूर अच्छी तरह उगें," फल के किसान ने उत्तर दिया.

"क्या तुम खुश हो? क्या तुम्हें यहाँ बहुत मेहनत करनी पड़ती है?"

"ओह, मुझे कोई आपत्ति नहीं है." उस आदमी ने उत्तर दिया. "मैं थोड़ा काम करता हूँ और बाकी काम सूरज कर देता है. पूरे दिन मैं खुली हवा में रहता हूँ और ज़मीन मुझे खाना और जो कुछ भी चाहिए वो देती है.”

"क्या तुम्हें यकीन है?" राजा ने पूछा. "अगर मैं तुम्हें सोने की एक थैली दूँ, तो क्या तुम्हें फिर काम नहीं करना पड़ेगा."

"अरे नहीं," उस आदमी ने कहा, "अगर मैं सोना ज़मीन में बो दूँ, तो वह कभी नहीं उगेगा.“

"शायद मैं तुम्हें अपना आधा राज्य दे दूँ," राजा ने प्रस्ताव रखा.

"लेकिन, महाराज, मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मेरा कोई बेटा नहीं है जो मेरी मदद कर सके. इतनी ज़मीन की देखभाल करना बहुत मुश्किल होगा. नहीं. मुझे लगता है कि मैं यहीं रहना पसंद करूँगा."

राजा खुश हुआ, क्योंकि यह आदमी परीक्षा में पास हो गया था. उसे पूरा विश्वास था कि किसान सचमुच खुश और संतुष्ट था. उसने अपने दल के बाकी सदस्यों को बुलाया और चिल्लाकर कहा: "मेरा बेटा बच गया! मेरा बेटा बच गया!" आखिर में उन्हें वो आदमी मिल गया था जिसकी खुशी उसके बेटे के स्वास्थ्य को बहाल कर सकती थी.

किसान की ओर मुड़कर एक दरबारी ने कहा कि, अगर किसान राजा को अपनी कमीज़ दे दे, तो उसका बेटा एक बार फिर ठीक हो जाएगा. लेकिन किसान ने उदास होकर अपना सिर हिलाया और कहा: "मैं राजकुमार के लिए अपनी कमीज खुशी से देता. लेकिन, जैसा कि आप देख रहे हैं, मेरे पास देने के लिए कोई कमीज़ नहीं है." इन शब्दों के साथ, उसने अपनी जैकेट के बटन खोल दिए. सच्चा खुश आदमी सच में इतना गरीब था कि उसके जैकेट के नीचे कोई कमीज़ नहीं थी.